इकाई 2 रंगमंच (नाट्यमण्डप) के प्रकार (भाग दो)

इकाई की रूपरेखा

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 ज्येष्ठ, मध्यम और अवर नाट्यमण्डपों का स्वरूप

2.3.1 भरतसम्मत नाट्यमण्डप के भेद

2.3.2 अभिनवगुप्त सम्मत नाट्यमण्डप के भेद

2.3.3 रेवाप्रसाद द्विवेदी का नाट्यमण्डप विषयक अभिमत

2.3.4 वाह्य आदि नाट्यमण्डपों (गृहों) का परिचय

2.4 सारांश

2.5 शब्दावली

2.6 सन्दर्भ ग्रन्थ

2.7 बोध प्रश्न

2.1 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन कर लेने के बाद आपको :

- रंगमंच (नाट्यमण्डप) प्रकार स्पष्ट हो सकेगा।
- रंगमंच (नाट्यमण्डप) के भेद–प्रभेद के सम्बन्ध में भ्रान्तियों का निराकरण हो सकेगा।
- रंगमंच के ज्येष्ठ, मध्यम और अवर (कनिष्ठ) भेदों का ज्ञान हो सकेगा।
- नाट्यशास्त्रीय आचार्यों के अनुसार रंगमंच के प्रकार का बोध हो सकेगा।
- अन्य पारम्परिक रंगमंच (नाट्यमण्डप) का भी ज्ञान हो सकेगा।

2.2 प्रस्तावना

नाट्यशास्त्रीय परम्परा में आकार के आधार पर रंगमंच (नाट्यमण्डप) का तीन भेद किया जाता है– ज्येष्ठ, मध्यम् और अवर (कनिष्ठ)। जिसमें मध्यम प्रकार के नाट्यमण्डप को अभिनय, श्रवण तथा दर्शन की दृष्टि से अत्यधिक उपयुक्त माना जाता है। इन त्रिविध रंगमंच (नाट्यमण्डप) को आचार्य भरत, आचार्य अभिनवगुप्त और आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी आदि ने अपनी मति के अनुसार व्यक्त किया है जिसे इस इकाई में व्यक्त किया जा रहा है।

2.3 ज्येष्ठ, मध्यम और अवर नाट्यमण्डपों का स्वरूप

आचार्य भरत आदि आचार्यों ने विभिन्न आकार–प्रकार के रंगमंच (नाट्यमण्डप) का विवरण प्रस्तुत किया है वे तीन प्रकार के होते हैं। जिनमें ज्येष्ठ रंगमंच (नाट्यमण्डप) देवताओं के लिए, मध्यम रंगमंच (नाट्यमण्डप) मनुष्यों (राजाओं) के लिए उपयोगी होता

है। कनिष्ट अर्थात् अवर नाट्यमण्डप साधारण प्रजाओं के लिए होता है। अभिनवगुप्त ने ज्येष्ठ प्रेक्षागृह को युद्ध–नियुद्ध, मार–काट, भगदड़, उल्कापात आदि दृश्यों वाले डिम आदि रूपकों के लिए उपयुक्त माना है। राजा आदि चरित्र प्रधान नाटकों के लिए मध्यम नाट्यमण्डप और साधारण लौकिक जीवन के विकृतियों को प्रदर्शित करने वाला भाण, प्रहसन आदि रूपकों को अभिनय के लिए अवर नाट्यमण्डप को उपयुक्त माना है।

नाट्यशास्त्र में विकृष्ट, चतुरस्र, त्र्यस्र नाट्यमण्डप को क्रमशः तीन भागों में विभाजित किया जाता है जिनका नाम ज्येष्ठ, मध्यम और अवर। इनमें ज्येष्ठ सबसे बड़ा, अवर सबसे छोटा तथा मध्यम दोनों का मध्यवर्ती होता है। कुछ विद्वान् आकार के आधार पर ज्येष्ठता आदि का निर्णय करते हैं और कुछ परिमाण के आधार पर। यदि आकार के आधार पर यह निर्णय किया जाय तो नाट्यमण्डप के तीन ही प्रकार होते हैं और यदि परिमाण के आधार पर निर्णय किया जाए तो हस्ताश्रित और दण्डाश्रित दोनों के आधार पर अट्ठारह प्रकार के नाट्यमण्डप हो जाते हैं। नाट्यशास्त्र में एक सौ आठ हाथ का नाट्यमण्डप ज्येष्ठ, चौसठ हाथ नाट्यमण्डप मध्यम और बत्तीस हाथ का अधम (कनिष्ठ) नाट्यमण्डप बताया गया है (ना.शा. 2/10)। यहाँ पर नाट्यमण्डपों के व्यावहारिक स्वरूप का प्रतिपादन करते हुए भी कहा गया है–

देवानां तु भवेज्ज्येष्ठं नृपाणां मध्यमं भवेत्।
शेषाणां प्रकृतीनां तु कनीयः संविधीयते।। (ना.शा. 2/11)

अर्थात् देवताओं के लिए ज्येष्ठ नाट्यमण्डप होना चाहिए, राजाओं के लिए मध्यम तथा शेष प्रजाओं के लिए कनिष्ठ (अवर) नाट्यमण्डप का विधान किया गया है। इस सम्बन्ध में अभिनवगुप्त का मानना है कि देवता और असुर जिसमें नायक और प्रतिनायक हों ऐसे डिम आदि रूपकों के अभिनय के लिए 108 हाथ वाला विकृष्ट अर्थात् ज्येष्ठ नाट्यमण्डप होना चाहिए। क्योंकि डिम में आरभटी वृत्ति की प्रधानता होती है। इसलिए उसका अभिनय मध्यम या कनिष्ठ नाट्यमण्डप में नहीं हो सकता है। आरभटी वृत्ति प्रधान डिम आदि में लम्बे–चौड़े रंगमंच की आवश्यकता होने से मृदंग आदि मढ़े हुए वाद्यों की अधिकता होने से और परिक्रमण आदि में अधिक ऊँचे एवं अधिक लम्बे स्थान की आवश्यकता होती है। किन्तु कुछ अन्य व्याख्याकारों का मानना है कि जिस मण्डप में देवतादि प्रेक्षक हो उसे ज्येष्ठ नाट्य मण्डप कहना चाहिए। लेकिन अभिनवगुप्त इससे सहमत नहीं है। प्रेक्षक रूप में देवतादि की संख्या परिमित होने के कारण प्रयोज्य नहीं है। वस्तुतः मण्डप आदि का विधान दशरूपक आदि को ध्यान में रखकर ही निर्मित किया जाता है। इस कारण से प्रेक्षक की दृष्टि से मण्डप की व्याख्या करना उचित नहीं होगा। इन तीनों प्रेक्षागृहों में मध्यम प्रेक्षागृह को प्रशस्त माना गया है जिसके सम्बन्ध में कहा गया है–

प्रेक्षागृहाणां सर्वेषां प्रशस्तं मध्यमं स्मृतम्।
तत्र पाठ्यं च गेयं च सुखश्राव्यतरं भवेत्।। (ना.श. 2/12)

अर्थात् सभी प्रकार के प्रेक्षागृहों में मध्यम प्रेक्षागृह को प्रशस्त यानि सर्वोत्तम कहा गया है। क्योंकि पाठ्य (सम्वाद) तथा गेय (संगीत) को इसमें सुखपूर्वक सुना जा सकता है। अवर नाट्यमण्डप में भाण प्रहसन आदि का अभिनय होता है। यहाँ पर मनुष्यों के नाट्यमण्डप के सम्बन्ध में भी कहा गया है कि इनके लिए प्रेक्षागृह की लम्बाई 64 हाथ और चौड़ाई 32 हाथ होनी चाहिए। जिससे इसी नाट्यमण्डप की उपयुक्तता सिद्ध

होती है। यह नाट्यमण्डप राजा आदि के चरित्रों से सम्बन्धित होता है। जिसके अभिनय में मध्यम परिमाण वाला नाट्यमण्डप उपयुक्त है। नाट्य निर्माताओं को अधिक बड़ा या छोटा मण्डप नहीं बनाना चाहिए क्योंकि अधिक बड़े नाट्य मण्डप में नाट्य अस्पष्ट हो जाता है। अत्यन्त बड़े तथा अत्यन्त छोटे नाट्यमण्डप में या तो आवाज बहुत तीव्र सुनाई देती है या सुनाई ही नहीं देती है। 32 हाथ वाले नाट्यमण्डप को अवर नाट्यमण्डप कहा जाता है। लेकिन इसका सबसे दोष यह होता है कि कम स्थान के कारण पाठ्य फैलने योग्य अवकाश न होने से यह विस्वर हो जाता है।

2.3.1 भरतसम्मत नाट्यमण्डप के भेद

आचार्य भरत मुनि प्रणीत नाट्यशास्त्रीय ग्रन्थों में 'नाट्यशास्त्र' सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है नाट्यशास्त्र के अनुसार अभिनय के लिए प्रेक्षागृह तीन प्रकार का होता है– विकृष्ट, चतुरस्र और त्र्यस्र। ये तीनों नाट्यमण्डप ज्येष्ठ, मध्यम् और अवर (कनिष्ठ) कहे जाते हैं। इनमें ज्येष्ठ नाट्यमण्डप देवताओं के लिए होता है जिसकी लम्बाई एक सौ आठ (108) हाथ की होती है। मध्यम नाट्यमण्डप चौसठ (64) हाथ का होता है। अवर नाट्यमण्डप जिसे त्रिभुजाकार नाट्यमण्डप कहा जाता है वह बत्तीस (32) हाथ का होता है। इस प्रकार भरत सम्मत नाट्यमण्डप तीन प्रकार के ही होते है जिसमें इन तीनों नाट्यमण्डपों में मध्यम आकार वाले प्रेक्षागृह को सर्वोत्तम माना गया है क्यों मध्यम प्रेक्षागृह में संवाद, गीत आदि स्पष्टतया सुनाई देते हैं। आचार्य भरत के अनुसार विकृष्ट (आयताकार) मध्यम प्रेक्षागृह चौसठ (64) हाथ लम्बा और बत्तीस (32) हाथ चौड़ा होता है। आचार्य के भरत के अनुसार विकृष्ट आयताकार मध्यम नाट्यमण्डप इस प्रकार का है –

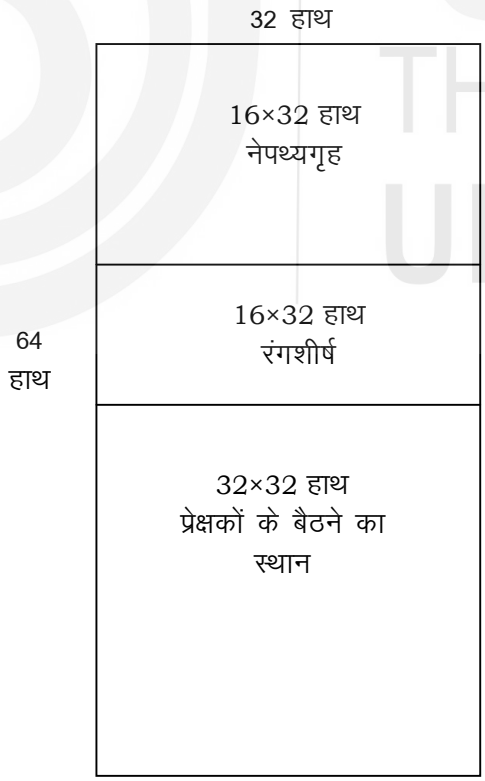

2.3.2 अभिनवगुप्त सम्मत नाट्यमण्डप के भेद

नाट्यशास्त्र आधारित अभिनवभारती के लेखक आचार्य अभिनवगुप्त भी नाट्यमण्डपों की संख्या पर विचार किये हैं। उनके अनुसार प्रथमतः नाट्यमण्डप विकृष्ट, चतुरस्र और त्र्यस्र भेद से तीन प्रकार का होता है। पुनः तीनों का तीन–तीन विभाजन ज्येष्ठ,

मध्यम और अवर के रूप में किया जाता है। इस प्रकार नाट्यमण्डपों की संख्या नौ (9) हो जाती है। पुनः हस्त और दण्ड भेद से नाट्यमण्डप की संख्या अट्ठारह (18) हो जाती है। कुछ आधुनिक विद्वानों ने इस व्याख्या पर यह कहकर आपत्ति उठाई है कि दण्ड प्रमाण से नौ (9) के अतिरिक्त नाट्यमण्डपों की कल्पना हस्तप्रमाण वाली नाट्यमण्डपों से आकार में ढाई गुना बड़ा होगा, जो आचार्य भरत सम्मत नहीं है। इस सम्बन्ध में अभिनवगुप्त ने कहा है कि अतिरिक्त (9) नौ नाट्यमण्डपों की स्वीकृति सर्वसंभाव्यता के सिद्धान्त के आधार पर की जानी चाहिए। अर्थात् कोई प्रयोग के रूप में कुछ हजार दर्शकों के बैठने के लिए उपयुक्त बड़ा नाट्यमण्डप बनाना चाहे तो दण्ड के नाप से बनाया जा सकता है। अनन्तर अभिनवगुप्त ने स्पष्ट कहा है कि अट्ठारह भेदों वाला नाट्यमण्डप में अधिकांश व्यवहार की दृष्टि से अनुपयोगी हैं। वे कहते हैं– ते चाद्यत्वेऽनुपयोगनिः, तथापि सम्प्रदायच्छिेदार्थं निर्दिश्यन्ते'। अभिनवगुप्त ने रंगपीठ और रंगशीर्ष दोनों का पृथक–पृथक प्रतिपादन किया है। उनके अनुसार विकृष्ट (आयताकार), मध्यम परिमाण वाले नाट्यमण्डप की रचना चौसठ (64) हाथ लम्बी और बत्तीस (32) हाथ चौड़ी होनी चाहिए। प्रथम रंगभूमि को दो भागों में विभाजित करें। उनमें 32×32 हाथ के एक भाग में प्रेक्षकों के बैठने की व्यवस्था करें और 32×32 हाथ वाले दूसरे भाग के दो बराबर–बराबर भागों में विभाजित करें। उनमें ऊपर के भाग में नेपथ्य बनाये और बीच वाले भाग 16×32 हाथ के भी दो खण्ड करें। उनमें 8×32 हाथ के एक भाग में रंगपीठ और दूसरे भाग में रंगशीर्ष का निर्माण करें। इस प्रकार अभिनवगुप्त विकृष्ट मध्यम नाट्यमण्डप की कल्पना की है।

आचार्य अभिनवगुप्त के अनुसार विकृष्ट मध्यम नाट्यमण्डप का स्वरूप–

2.3.3 रेवाप्रसाद द्विवेदी का नाट्यमण्डप विषयक अभिमत

आधुनिक नाट्याचार्यों में प्रमुख आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी के द्वारा भी नाट्यमण्डप या नाट्यगृह के सम्बन्ध में 'नाट्यानुशासनम्' के प्रथम उन्मेष में विचार किया गया है।

जिसमें उन्होंने बतलाया है कि भरत आदि महर्षियों ने रंगपीठ के दो भेद बतलाए हैं– ब्राह्म और वैष्णव। ब्राह्म पीठ केवल वेदिका से सम्बन्धित होती है इसमें न स्तम्भ, न द्वार, न शीर्ष और न मण्डप होता है लेकिन वैष्णव पीठ भित्ति और मण्डप से युक्त होता है जिसका रेवाप्रसाद द्विवेदी मण्डप और आकार की दृष्टि से तीन भेद करते हैं–

मण्डपाकारभेदेन भेदा अस्य त्रयः स्मृताः।
विकृष्टं चतुरस्रं च त्र्यस्रञ्चेति यथाक्रमम्।। (नाट्यानुशासन, 1/15)

अर्थात् मण्डप और आकार के भेद से इसके तीन भेद माने गये हैं जो क्रमशः हैं– विकृष्ट चतुरस्र और त्र्यस्र। इनके सम्बन्ध में आचार्य रेवाप्रसाद बतलाते हैं कि वस्तुतः विकृष्ट नाम से इसे इसलिए पुकारा जाता है कि इसकी चौड़ाई से लम्बाई दुगनी होती है। लम्बाई और चौड़ाई यदि बराकर हो तो उसे चतुरस्र कहा जाता है। चतुरस्र ही त्र्यस्र बन जाता है यदि पिछले भाग में चौड़ाई न रखी जाय। यह जो वैष्णव पीठ है यह विष्णु की डगों के समान है। यहाँ के तीन डग से तात्पर्य यह है कि भगवान् विष्णु तीन डग से जिस प्रकार तीन लोक में व्याप्त हो गये हैं उसी प्रकार रंगमंच (मण्डप) भी तीनों लोकों में व्याप्त है। इससे सभी लोग रंजन करते हैं।

रेवाप्रसाद द्विवेदी ने भी पुनः विकृष्ट, चतुरस्र और त्र्यस्र नाट्यमण्डप का प्रमाण के आधार पर तीन भेद बतलाये हैं–

त्रैविध्यं पुनरप्यस्य त्रिविधस्यादि जायते।
भेदैस्त्रिभिः प्रमाणां ज्येष्ठ मध्याऽधमाभिधैः।। (नाट्यानुशासन 1/18)

अर्थात् तीनों प्रकार के पीठ का प्रमाणों के आधार पर ज्येष्ठ, मध्य और अधम (अवर) तीन प्रकार हो जाते हैं। ज्येष्ठ प्रमाण में यह पूरा त्रैलोक्य ही रंग मण्डप को व्याप्त कर सकता है। जिसकी लम्बाई 108 हाथ और चौड़ाई उसकी आधी होती है। वे रंगशाला में उतनी लम्बाई और चौड़ाई की अपेक्षा करते हैं जितने में दृश्य और श्रव्य की गति बनी रहे। रंगपीठ के निर्माण के विषय में रेवाप्रसाद द्विवेदी का मानना है–

द्विगुणं त्रिगुणं पीठं चतुर्गणमथापि वा।
हस्तैः क्रियेत दण्डैर्वा प्रयोगो हीयते च चेत्।। (नाट्यानुशासनम्, 1/22)

अर्थात् रंगपीठ को दुगना बड़ा भी बनाया जा सकता है और तिगुना तथा चौगुना भी हस्तों के आधार पर या दण्डों के आधार पर बनाने में कोई हानि नहीं है। उन्होंने प्रेक्षकों के निवेश रंगपीठ और नेपथ्यगृह को ही नाट्यमण्डप कहा है। नाट्यशाला रम्य से रम्य होनी चाहिए। इनके द्वारा भी मध्यम नाट्यमण्डप को ही उपयुक्त माना गया है। नाट्यमण्डप की समुचित व्यवस्था के लिए ध्वनि यन्त्रों और विद्युत व्यवस्था होनी चाहिए। साथ ही वास्तु कला और स्थापत्य कला का प्रदर्शन भी नाट्यमण्डप में अपेक्षित है। इन सबके बावजूद रेवाप्रसाद द्विवेदी प्रयोग पर ही अधिक बल देते हैं। वे कहते हैं–

भित्तिस्तम्भ द्वार–पीठ–नेपथ्य–प्रेक्षणादिकम्।
गौणमेव प्रधानत्वं प्रयोगस्यैव सर्वथा।। (नाट्यानुशासन, 1/40)

अर्थात् भित्ति, स्तम्भ, द्वार, पीठ, नेपथ्य, प्रेक्षक निवेश आदि सब गौण हैं। प्रधान तो केवल प्रयोग ही होता है। वे नाट्यमण्डप के सम्बन्ध में कहते हैं–

प्रेक्षकाणां निवेशश्च रंगपीठं तथैव च।
नेपथ्यगृहकं चेति त्रयं वै नाट्यमण्डपः।। (नाट्यानुशासन, 1/45)

प्रेक्षकों का निवेश, रंगपीठ और नेपथ्यगृह इन तीन का नाम ही नाट्यमण्डप है। इस प्रकार आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी अभिमत नाट्यमण्डप का स्वरूप इस प्रकार निर्मित होगा–

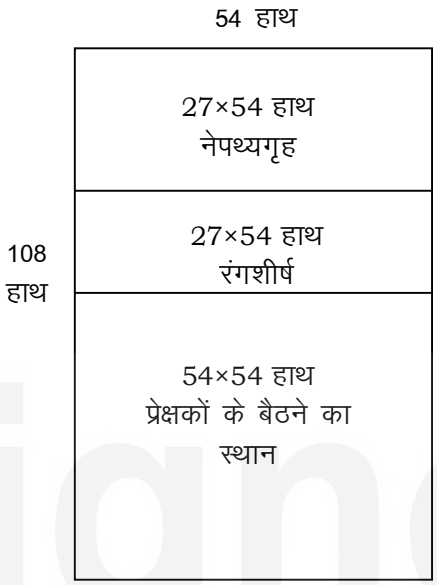

(ज्येष्ठविकृष्ट नाट्यमण्डप)

अन्य नाट्याचार्यों की भांति इन्होंने भी रंगशीर्ष, स्तम्भ भित्ति, वेदिका पेटी आदि का उल्लेख अपने नाट्यमण्डप में किया है।

2.3.4 वाह्य आदि नाट्यमण्डपों (गृहों) का परिचय

यदि हम वाह्य नाट्यमण्डप पर विचार करें तो ध्यान में आता है कि ऐसा नाट्य स्थल जो खुले आसमान के नीचे या अन्य स्थलों पर मंचन कार्य के उपयोग में लाया जाता है। वह वाह्य नाट्यमण्डप की श्रेणी में आता है। यह भी कहा जा सकता है कि जो मंचन के साथ अन्य सांस्कृतिक गतिविधि के काम में भी लाया जाता है। नाट्योद्भव के आरम्भिक काल में ये नाट्यमण्डप राजभवनों की संगीतशाला और नृत्यशालाओं के रूप में सामने आते हैं। मंदिरों को भी नाट्यमंचन के लिए प्रयोग में लाया जाता रहा है। प्राचीन ग्रीक रंगमंच की व्यवस्था खुले चारों ओर से पहाड़ियों से घिरे स्थान में होती थी। रंगमंच का स्थान अत्यधिक बड़ा होता था। क्योंकि कोरस (समूहगान) की मण्डली को गायन के साथ–साथ गति के लिए जगह चाहिए थी। 465 ई.पू. के आसपास ऐसी रंगशालाओं का उपयोग होने लगा जो देवालय या राजप्रसाद से जुड़ी होती थी। रंगमंच तथा प्रेक्षागृह इनमें खुले अहाते में ही होता था पर दीवार रंगमंच की पृष्ठभूमि के लिए मिल जाती थी तथा इसी दीवार से सटाकर बाद में एक प्रसाधन कक्ष भी बनाया जाने लगा और पुनः इसका उपयोग दृश्यबन्धों के लिए होने लगा। इस प्रकार के नाट्यमण्डपों का व्यावहार भारत में भी रहा है 'विधपु' में देवालय की रंगशाला मिलती है। रोम में पत्थर से स्थायी नाट्यगृह बनाने की परम्परा दूसरी शताब्दी ई. पूर्व में आरम्भ हुई थी। मध्यकाल मं चर्च का उपयोग भी नाट्यमण्डप के रूप में किया जाने लगा था तथा रंगमंच पर पर्दे का उपयोग आरम्भ हुआ। गुफाओं को भी नाट्यमण्डप के उपयोग में लाया जाता रहा है। जोगीमारा गुफा के लेख से

यह पता चलता है कि वह गुफा सुतनुका नाम की देवदासी ने नर्तकी अथवा नटियों के लिए बनवायी थी। सीतावेंगा गुफा नाट्यमण्डप की भांति ही बनी हुई है। इसके समक्ष सीढ़ी की भांति प्रेक्षागृह के भी अवशेष विद्यमान है। भारत में गुफाएं जनमनोरंजन के काम में तो बहुत प्राचीन समय आती रही है जैसे कि अश्घोष और कालिदास की कृतियों से भी संकेत मिलता है। कभी–कभी ऊँचे स्थान, समतल मैदान, पर्वतीय सुरक्षित क्षेत्रों को भी मंचन के कार्य में लाया जाता है। वृत्त नाट्यमण्डप, खुला नाट्यमण्डप जिसे ओपेन थियटर के नाम से भी जाना जाता है। जो मंचन की दृष्टि से सुविधाजनक भी होता है। इसी तरह और भी अनेक वाह्य नाट्यमण्डप के रूप हो सकते हैं। इन सभी नाट्यमण्डपों को बहिरस्र नाट्यमण्डप भी कहते हैं।

2.4 सारांश

इस इकाई के अन्तर्गत भारतीय नाट्य परम्परा के मान्य आचार्य भरत, अभिनवगुप्त और रेवाप्रसाद द्विवेदी द्वारा निर्दिष्ट रंगमंच के स्वरूप के विषय में प्रतिपादन किया गया है। ज्येष्ठ, मध्यम और अवर नाट्य मण्डप स्वरूप के साथ विभिन्न आचार्यों द्वारा रंगमंच भेदों की भी चर्चा की गयी है। जिसमें आचार्य भरत द्वारा तीन प्रकार के रंगमंच अभिनवगुप्त के अनुसार नौ तथा अट्ठारह एवं रेवा प्रसाद द्विवेदी द्वारा नौ प्रकार के रंगमंच को स्पष्ट किया गया है। यहाँ बाह्य आदि नाट्यमण्डपों के रूप में देवालय, राजप्रसाद गुफा, पहाड़ी नाट्यमण्डप का वर्णन किया गया है जिससे नाट्यमण्डप के विविध स्वरूप सामने आते हैं। इस प्रकार इसके अध्ययन से नाट्यमण्डप के प्राचीन महत्त्व के साथ अर्वाचीन महत्त्व का भी बोध होगा।

2.5 शब्दावली

प्रतिनायक – नायक के विपरीत रहने वाला प्रतिनायक होता है।

अवर – आकार, प्रकार व आयु में छोटा को अवर कहा जाता है।

वैष्णव – विष्णु से सम्बन्धित को वैष्णव कहा जाता है।

कोरस – समूह गान को कोरस कहा जाता है।

नर्तकी – नर्तन करने वाली नर्तकी कहलाती है। यह नर्तक का स्त्रीलिंग है। नर्तकी का उल्लेख नाट्यशास्त्र में रंग दैवतपूज के प्रसंग में किया गया है। इस पूजन के समय होम के लिए दीप्त अग्नि से ही उल्काएं जलायी जाती हैं। जिनसे राजा तथा नर्तकी की दीप्ति का अभिवर्धन होता है। (नाट्यशास्त्र 3/83)

2.6 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. नाट्यशास्त्र, सं. डॉ. पारसनाथ द्विवेदी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, 2015
2. नाट्यशास्त्रविश्वकोश, राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली, 1999
3. भरत और भारतीय नाट्यकला, सुरेन्द्रनाथ दीक्षित, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2009

4. श्रीविष्णुधर्मोत्तरमहापुराण, टीकाकार आचार्य शिवप्रसाद द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2016
5. नाट्यशास्त्रीय मूलतत्त्वों की विकास परम्परा, सं. कुसुम भूरिया दत्ता, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली, 2012
6. नाट्यानुशासन, रेवाप्रसाद द्विवेदी, कालिदाससंस्कृतसंस्थानम्, वाराणसी, 2008
7. अग्निपुराण का नाट्यदर्शन, डॉ. संजय कुमार, सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2018
8. नाट्यम् अंक 80, (नाट्यशास्त्र विशेषांक), नाट्यपरिषद् संस्कृत विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मार्च–2017
9. संस्कृत हिन्दी कोश, वामनशिवरामआप्टे, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2016

2.5 बोध प्रश्न

1. आकार के आधार पर रंगमंच के प्रकार को स्पष्ट कीजिए।
2. मध्यम रंगमंच (नाट्यमण्डप) की विशेषता एवं महत्त्व का वर्णन कीजिए।
3. आचार्य भरत सम्मत नाट्यमण्डप का वर्णन कीजिए।
4. आचार्य अभिनवगुप्त सम्मत रंगमंच (नाट्यमण्डप) का वर्णन कीजिए।
5. आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी के अनुसार रंगमंच (नाट्यमण्डप) विषयक अभिमत को स्पष्ट कीजिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY